विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट 2026: युवा सशक्तिकरण की राह

प्रकाशन: 22 नवंबर 2026

समाचार-संदर्भ: 19 नवंबर 2026, नई दिल्ली। GS-1: जनसंख्या और जनसंख्या-संबंधी मुद्दे। GS-2: स्वास्थ्य, शिक्षा और मानव-संसाधन विकास।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) ने 19 नवंबर 2026 को अपनी वार्षिक प्रमुख रिपोर्ट 'विश्व जनसंख्या स्थिति' (State of World Population - SOWP) 2026 जारी की। इस संस्करण का शीर्षक है - 'सफल पीढ़ियाँ: भविष्य की दिशा तय करने के लिए युवाओं को सशक्त बनाना' (Succeeding Generations: Empowering young people to chart the future)। रिपोर्ट 73 देशों के 1,08,000 से अधिक इंटरनेट से जुड़े वयस्कों के 'जनसांख्यिकीय भविष्य सर्वेक्षण' (Demographic Futures Survey) पर आधारित है, जिसमें भारत से 1,722 लोग शामिल हुए। यह सर्वेक्षण इंटरनेट से जुड़े वयस्कों तक सीमित था, इसलिए इसके निष्कर्ष सभी युवाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते। UNFPA की यह प्रमुख वार्षिक रिपोर्ट 1978 से प्रकाशित हो रही है।

रिपोर्ट का केंद्रीय संदेश

रिपोर्ट का मुख्य संदेश है कि दुनिया को 'आने वाली पीढ़ियों को बचाने' से आगे बढ़कर 'उन्हें सफल होने देने' की दिशा में काम करना होगा। सर्वेक्षण बताता है कि युवा अब भी रिश्ते और परिवार चाहते हैं: 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विवाह को आदर्श रिश्ता माना और 91 प्रतिशत कम-से-कम एक बच्चा चाहते हैं। फिर भी आर्थिक असुरक्षा के कारण जीवन के पड़ाव टल रहे हैं - माता-पिता से आर्थिक स्वतंत्रता 20 के दशक के उत्तरार्ध में, स्थायी साझेदारी 30 के दशक में और माता-पिता बनना 40 के करीब जा पहुँचा है। साझेदारी बनाने में 57 प्रतिशत और बच्चे पैदा करने में 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आर्थिक असुरक्षा को सबसे बड़ी बाधा बताया। भविष्य को लेकर सबसे आशावादी उत्तरदाता सबसे कम आशावादी उत्तरदाताओं की तुलना में औसतन 0.4 अधिक बच्चे चाहते थे।

युवाओं के सामने मुख्य बाधाएँ

रिपोर्ट के अनुसार विश्व में हर पाँच में से एक युवा NEET है, अर्थात न तो रोजगार में है, न शिक्षा में, न प्रशिक्षण में। 15-24 आयु की युवतियों के NEET होने की संभावना युवकों से दोगुने से अधिक है, जबकि 49 प्रतिशत दिव्यांग युवा न तो विद्यालय में हैं और न ही कार्यरत हैं। निम्न-आय वाले देशों में पाँच में से चार युवा वयस्कों के पास सुरक्षित वेतनभोगी काम नहीं है। सशस्त्र संघर्ष के 50 किलोमीटर दायरे में रहने वाले 10-24 आयु के लोगों की संख्या 1990 के 16.4 करोड़ से बढ़कर 2022 में 34 करोड़ हो गई थी। किशोरों के कुल रोग-बोझ में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकारों की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। 15-19 वर्ष की उन लड़कियों में, जिनका कभी घनिष्ठ साथी रहा है, लगभग एक-चौथाई ने साथी द्वारा शारीरिक या यौन हिंसा का अनुभव बताया है। OECD देशों की आधिकारिक विकास सहायता (ODA) 2025 में 23 प्रतिशत घटी, जो अब तक की सबसे बड़ी वार्षिक कटौती थी; इसका असर यह हो सकता है कि 2030 तक 2.2 करोड़ अतिरिक्त रोकथाम-योग्य मौतें हों।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अंतर

30 वर्ष या उससे कम आयु के वयस्क विश्व जनसंख्या का 19 प्रतिशत हैं, लेकिन संसदीय सीटों में उनकी हिस्सेदारी केवल 2.8 प्रतिशत है, और इनमें से आधी से भी कम सीटें महिलाओं के पास हैं। एक सर्वेक्षण में 30 वर्ष से कम आयु के 76 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि राजनेता उनकी बात नहीं सुनते। रिपोर्ट इसे नीतियों और युवाओं के बीच विश्वास की खाई मानती है।

भारत से जुड़े निष्कर्ष

भारत में 10-24 आयु के लोग चार में से एक से अधिक हैं, इसलिए युवाओं की आकांक्षाएँ देश की जनसांख्यिकीय दिशा तय करेंगी। सर्वेक्षण में भारत के 83 प्रतिशत उत्तरदाता भविष्य को लेकर सकारात्मक या बहुत सकारात्मक थे। 18-39 आयु की महिलाओं ने आदर्श परिवार-आकार 2.1 बच्चे बताया, और 35-39 आयु के लगभग 85 प्रतिशत निःसंतान उत्तरदाता माता-पिता बनना चाहते थे। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-6) और राष्ट्रीय आँकड़ों के अनुसार मातृ-मृत्यु दर 2022-24 में 87 प्रति एक लाख जीवित जन्म रही, दक्ष स्वास्थ्य-कर्मियों से होने वाले प्रसव 89.5 प्रतिशत (NFHS-5) से बढ़कर 91.3 प्रतिशत हुए और परिवार नियोजन की अपूर्ण मांग 9.4 प्रतिशत से घटकर 8.5 प्रतिशत रह गई। रिपोर्ट प्रजनन-विकल्प (reproductive choice) को इन आकांक्षाओं की नींव मानती है - इसका अर्थ है यह तय करने की स्वतंत्रता कि बच्चे चाहिए या नहीं, कब और कितने।

आगे की राह

विश्लेषण के लिए रिपोर्ट के सुझाव चार दिशाएँ देते हैं: स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक अवसरों में निवेश; युवाओं की शारीरिक स्वायत्तता और प्रजनन-विकल्प की सुरक्षा; युवाओं को उनसे जुड़ी नीतियों की योजना में साझेदार बनाना; और पीढ़ियों के बीच सहयोग, जिसमें लड़कियाँ, दिव्यांग युवा और वंचित समूह भी शामिल हों। UNFPA की भारत प्रतिनिधि के अनुसार 'सफल पीढ़ियों' का अर्थ है युवाओं के लिए बनी नीतियों की योजना में युवाओं के विचारों को शामिल करना।

परीक्षा की दृष्टि से

यह विषय जनसंख्या, युवा और विकास को जोड़ता है। मेंस में जनसांख्यिकीय लाभांश (demographic dividend) केवल जनसंख्या-संरचना से नहीं, अवसरों और भागीदारी से बनता है - यह तर्क रखें। प्रिलिम्स में रिपोर्ट का नाम, जारीकर्ता संस्था, सर्वेक्षण का नाम और प्रमुख आँकड़े याद रखें। वर्ष 2025 की ODA कटौती और संघर्ष-प्रभावित युवाओं के आँकड़े पुराने वर्षों के हैं, इसलिए उन्हें पूर्वकाल में ही लिखें।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

युवाओं की आकांक्षाओं और उन्हें उपलब्ध अवसरों के बीच बढ़ती खाई का विश्लेषण कीजिए। जनसांख्यिकीय लाभांश को वास्तविक लाभ में बदलने के लिए किन नीतिगत कदमों की आवश्यकता है? (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: SOWP 2026 के केंद्रीय संदेश से शुरुआत कीजिए - युवा शिक्षित और जानकार हैं, फिर भी जीवन के पड़ाव उनसे दूर हो रहे हैं।

मुख्य भाग में: आर्थिक असुरक्षा, NEET की स्थिति, लैंगिक और दिव्यांगता-आधारित असमानता, संघर्ष-प्रभावित युवा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अंतर रखिए। फिर स्वास्थ्य-शिक्षा में निवेश, प्रजनन-विकल्प की सुरक्षा, युवा-भागीदारी और अंतर-पीढ़ी सहयोग को समाधान के रूप में जोड़िए।

निष्कर्ष में: निष्कर्ष दीजिए कि जनसांख्यिकीय लाभांश स्वतः नहीं मिलता; अवसर देने वाली नीतियाँ ही युवा-जनसंख्या को शक्ति बनाती हैं।

स्रोत

1. UNFPA: State of the World Population Report 2026 launch,19 November 2026
2. UNFPA SOWP 2026 report summary and key figures,19 November 2026

संबंधित पृष्ठभूमि: UNFPA जनसांख्यिकीय भविष्य सर्वेक्षण

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट 2026 किसने जारी की?

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) ने 19 नवंबर 2026 को। यह इस शृंखला की वार्षिक प्रमुख रिपोर्ट है, जो 1978 से प्रकाशित हो रही है।

SOWP 2026 किस सर्वेक्षण पर आधारित है?

73 देशों के 1,08,000 से अधिक इंटरनेट-जुड़े वयस्कों के जनसांख्यिकीय भविष्य सर्वेक्षण (Demographic Futures Survey) पर, जिसमें भारत से 1,722 लोग शामिल हुए। यह सर्वेक्षण इंटरनेट से जुड़े वयस्कों तक सीमित था, इसलिए इसके निष्कर्ष सभी युवाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

NEET का क्या अर्थ है?

ऐसा युवा जो न रोजगार में है, न शिक्षा में और न प्रशिक्षण में। रिपोर्ट के अनुसार विश्व में हर पाँच में से एक युवा NEET है।

pcsmantra.com